न्यूज़ टुडे

संयुक्त राष्ट्र के सदस्य देशों ने ऐतिहासिक 'कम्प्रोमिसो डी सेविला' (सेविला प्रतिबद्धता) आउटकम डॉक्यूमेंट को अंतिम रूप दिया

'कम्प्रोमिसो डी सेविला' यानी "सेविला प्रतिबद्धता" **चौथे अंतर्राष्ट्रीय विकास वित्त सम्मेलन (FFD4)** का अंतिम आउटकम डॉक्यूमेंट है।

चौथा अंतर्राष्ट्रीय विकास वित्त सम्मेलन (FFD4) के बारे में

- **FFD4 का उद्देश्य:** यह सतत विकास के लिए वित्त-पोषण की दिशा में एक नए वैश्विक फ्रेमवर्क का आधार है।
- **आयोजन स्थल:** सेविला (स्पेन)।
- **भागीदार:** FFD में देशों के नेता, संस्थान, व्यवसाय जगत और सिविल सोसाइटी उच्चतम स्तर पर वार्ता के लिए एकजुट होते हैं।
  - **संयुक्त राज्य अमेरिका ने इस प्रक्रिया से पूरी तरह से बाहर होने का निर्णय** लिया है।
- **विकास के लिए वित्त-पोषण (FFD):** संयुक्त राष्ट्र में यह प्रक्रिया **विकास के लिए वित्त-पोषण पर तीन अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों के समझौतों के क्रियान्वयन का समर्थन** करने पर केंद्रित है। (इन्फोग्राफिक देखिए)

विकास वित्त-पोषण प्रक्रिया का विकास

मॉन्टेरी कंसेंसस (2002)
- इसने **विकास के वित्त-पोषण पर पहला 'वैश्विक सहमति डॉक्यूमेंट"** प्रस्तुत किया था। इसमें मुख्य रूप से **आधिकारिक विकास सहायता (ODA) में वृद्धि,** सहायता का प्रभावी होना (पेरिस डिक्लेरेशन), IMF गवर्नेंस प्रणाली में सुधार, और नवोन्मेषी वित्त-पोषण तंत्र जैसे पहलुओं पर ध्यान केंद्रित किया गया था।

दोहा डिक्लेरेशन (2008)
- इसने 2008 के वैश्विक वित्तीय संकट के बीच **मॉन्टेरी कंसेंसस की पुनः पुष्टि** की थी। साथ ही, **वित्त-पोषण में लैंगिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित** किया गया था तथा जलवायु वित्त-पोषण (ग्रीन क्लाइमेट फंड आदि) जैसी नई पहलों को भी जोड़ा गया था।

अदीस अबाबा एक्शन एजेंडा (2015)
- यह सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) के अनुरूप है। इसमें **एकीकृत राष्ट्रीय वित्त-पोषण फ्रेमवर्क्स (Integrated National Financing Framework: INFFs)** की शुरुआत की गई है।
- **INFFs के बारे में**
  - ये अलग-अलग देशों के स्वामित्व वाले और उन्हीं के नेतृत्व वाले योजना निर्माण एवं वितरण साधन हैं। ये सरकारों को **सतत विकास प्राथमिकताओं के अनुरूप वित्तीय संसाधन जुटाने** में मदद करते हैं।

FFD4 आउटकम डॉक्यूमेंट के मुख्य बिंदुओं पर एक नजर

- **वैश्विक वित्त-पोषण फ्रेमवर्क:** यह डॉक्यूमेंट **अदीस अबाबा एक्शन एजेंडा, मॉन्टेरी कंसेंसस और दोहा डिक्लेरेशन** की प्रतिबद्धताओं की फिर से पुष्टि करता है।
  - इसका उद्देश्य **विकासशील देशों में सतत विकास लक्ष्य (SDG) की प्राप्ति के लिए आवश्यक वित्त-पोषण में प्रत्येक वर्ष 4 ट्रिलियन डॉलर की कमी को दूर** करना है।
- **अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थानों में सुधार:** इस डॉक्यूमेंट में **समावेशी गवर्नेंस प्रणाली** सुनिश्चित करने की मांग की गई है। इसके लिए अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) कोटा प्रणाली में सुधार, विश्व बैंक में देशों की शेयरधारिता की समीक्षा, इत्यादि की सिफारिश की गई है।
- **ऋण लेने और चुकाने के दायित्व का प्रबंधन:** संयुक्त राष्ट्र, IMF और विश्व बैंक मिलकर ऐसे दिशा-निर्देश या "स्वैच्छिक सिद्धांत" बना रहे हैं, जिनका देश अपने ऋण (कर्ज) के प्रबंधन और लेन-देन में पालन कर सकेंगे। ये सिद्धांत अनिवार्य नहीं होंगे, बल्कि देशों को उन्हें अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा।
- **कर सुधार:** यह डॉक्यूमेंट **बेस इरोजन एंड प्रॉफिट शिफ्टिंग (BEPS) पर OECD/ G-20 समावेशी फ्रेमवर्क** के तहत **पिलर-II** के कार्यान्वयन को मान्यता देता है। पिलर-II बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लिए उनके संचालन क्षेत्र वाले सभी देशों/ क्षेत्रों में **न्यूनतम कॉर्पोरेट टैक्स का भुगतान अनिवार्य** करता है।
  - साथ ही, यह डॉक्यूमेंट पिलर-II के तहत **ग्लोबल एंटी-बेस इरोजन मॉडल नियमों और सब्जेक्ट टू टैक्स रूल (STTR)** को लागू करने के लिए **देश-विशेष आधारित तकनीकी सहायता** प्रदान करने का समर्थन भी करता है।

केंद्र सरकार ने 'जेंडर बजटिंग नॉलेज हब' पोर्टल लॉन्च किया

केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्रालय ने जेंडर बजटिंग पर राष्ट्रीय परामर्श के दौरान **'जेंडर बजटिंग नॉलेज हब' पोर्टल** लॉन्च किया।

जेंडर बजटिंग नॉलेज हब पोर्टल के बारे में

- यह एक **केंद्रीकृत पोर्टल** है। इस पर कई तरह की उपयोगी सामग्री जैसे **पॉलिसी ब्रीफिंग, सर्वश्रेष्ठ प्रथाएं, जेंडर-आधारित आंकड़े** आदि उपलब्ध हैं।
- इसका उपयोग **केंद्र और राज्य सरकारों के मंत्रालयों/ विभागों** और अन्य हितधारकों द्वारा किया जा सकता है।
- इसमें एक **ऑनलाइन एप्लिकेशन पोर्टल** भी है, जिसके माध्यम से जेंडर बजटिंग से जुड़े **प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण कार्यक्रमों** के लिए प्रस्ताव भेजे जा सकते हैं।

जेंडर बजटिंग (GB) क्या है?

- यह एक ऐसा दृष्टिकोण है, जो **सरकारी योजनाओं और बजटों में लैंगिक समानता** को एकीकृत करता है। यह विश्लेषण करता है कि बजट किस प्रकार **लैंगिक समानता को बढ़ावा देने** में सहायक साबित हो सकता है।
- **जेंडर बजटिंग में सरकारी बजट का गहन विश्लेषण शामिल है जैसे-**
  - बजट का विश्लेषण करना कि वह महिलाओं/ पुरुषों पर क्या प्रभाव डालता है।
  - प्रतिबद्धताओं और संबंधित कार्यों को प्राथमिकता देना तथा उनके अनुसार कार्य योजना बनाना।
  - लैंगिक समानता से संबंधित प्रतिबद्धताओं के लिए बजट आवंटन सुनिश्चित करना।

भारत में जेंडर बजटिंग का विकास

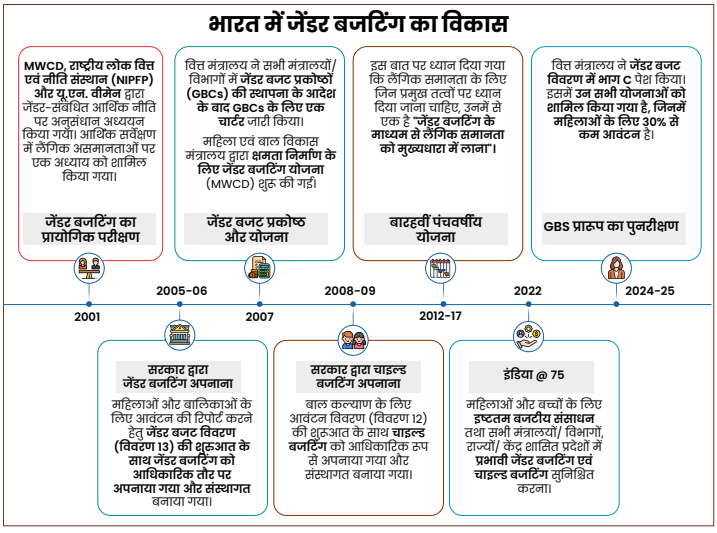

भारत में जेंडर बजटिंग की आवश्यकता

- **जेंडर-संवेदनशील नीतियां:** बजटीय आवंटन का संसाधनों के वितरण के पैटर्न के माध्यम से महिलाओं और पुरुषों पर अलग-अलग प्रभाव पड़ता है। इसलिए नीति निर्माण, क्रियान्वयन और मूल्यांकन में लगातार **लैंगिक दृष्टिकोण** को शामिल करना आवश्यक है।
- **उत्तरदायी शासन व्यवस्था और सहभागी बजटिंग:** यह सभी स्तरों पर जैसे- पंचायती राज संस्थाओं, शहरी स्थानीय निकायों आदि में निर्णय लेने में महिलाओं की अधिक भागीदारी को प्रोत्साहित करता है।
- **कानूनी ढांचे को मजबूत करना:** यह महिलाओं से संबंधित कानूनों जैसे- आपराधिक कानून संशोधन अधिनियम 2013, कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न की रोकथाम अधिनियम, 2013 आदि को मजबूत करता है।

अब लड़कियां आर्ट्स की बजाय साइंस विषय को ज्यादा चुन रही हैं - STEM शिक्षा में लैंगिक समानता की ओर रुझान

शिक्षा मंत्रालय के अनुसार, 2024 में पहली बार पिछले दस सालों में ऐसा हुआ है कि 12वीं कक्षा में विज्ञान विषय (28.14 लाख) लेने वाली लड़कियों की संख्या आर्ट्स (27.24 लाख) लेने वाली लड़कियों की संख्या से ज़्यादा थीं।

- यह **पारंपरिक लैंगिक प्रवृत्ति में एक बड़े बदलाव को प्रदर्शित** करता है, क्योंकि अब तक यह माना जाता था कि विज्ञान केवल लड़कों का विषय है। लेकिन अब देश भर की लड़कियां भी इसे पूरे उत्साह से अपना रही हैं।

STEM (विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग व गणित) में महिलाएं

- **स्थिति:**
  - हालांकि, अब भी विज्ञान विषय अपनाने में लड़कों की संख्या लड़कियों से ज्यादा है, लेकिन यह **अंतर धीरे-धीरे कम** हो रहा है। 2024 में विज्ञान स्ट्रीम से 12वीं पास करने वाले सभी छात्रों में से **46% लड़कियां** थीं।
  - ऑल इंडिया सर्वे ऑन हायर एजुकेशन (AISHE) 2021–22 के अनुसार, **उच्चतर शिक्षा में विज्ञान विषय को 52.1% लड़कियों** ने अपनाया था।
  - **मेडिकल क्षेत्र में लड़कियों की भागीदारी लड़कों के बराबर है** और इंजीनियरिंग व टेक्नोलॉजी जैसे पारंपरिक रूप से पुरुष-प्रधान क्षेत्रों में भी उनकी संख्या धीरे-धीरे बढ़ रही है।
- **बाधाएं:**
  - सामाजिक और सांस्कृतिक मानदंड (जैसे सीमित लैंगिक भूमिकाएं);
  - रोल मॉडल की कमी (विज्ञान में कम महिला नेतृत्व दिखाई देने से लड़कियों की प्रेरणा कम होती है);
  - कार्यस्थल पर असमानता (भेदभावपूर्ण कार्य संस्कृति) आदि।
- **STEM में महिलाओं की अधिक भागीदारी की आवश्यकता क्यों है:** STEM में लैंगिक समानता और विविधता सुनिश्चित करने के लिए; लैंगिक अंतराल को समाप्त करने के लिए; उनकी वैज्ञानिक क्षमता का दोहन करने के लिए आदि।

STEM में महिलाओं की स्थिति सुधारने के लिए शुरू की गई पहलें

विज्ञान ज्योति
इसका उद्देश्य लड़कियों को STEM में उच्चतर शिक्षा प्राप्त करने और करियर बनाने के लिए प्रोत्साहित करना है।

CURIE पहल
इसका उद्देश्य महिला विश्वविद्यालयों में अनुसंधान और विकास (R&D) से जुड़ी सुविधाओं को बेहतर बनाना है, ताकि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी (S&T) के क्षेत्र में होनहार छात्राओं को आकर्षित किया जा सके, उन्हें प्रशिक्षण दिया जा सके और उन्हें आगे भी इस क्षेत्र में बनाए रखा जा सके।

WISE-KIRAN योजना
यह योजना महिला वैज्ञानिकों को विज्ञान और इंजीनियरिंग के क्षेत्रों में नवाचार एवं अग्रणी शोध कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करती है।

QS वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2026 में भारतीय संस्थानों की रैंकिंग में सुधार हुआ

प्रधान मंत्री ने इस उपलब्धि का स्वागत किया तथा भारत के शैक्षणिक संस्थानों में **अनुसंधान और नवाचार** को बढ़ावा देने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता को दोहराया।

- **QS वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग** का प्रकाशन **लंदन** स्थित वैश्विक उच्चतर शिक्षा विश्लेषण फर्म **क्वाक्वेरेली साइमंड्स** द्वारा हर साल किया जाता है।

QS वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2026 पर एक नजर

- रैंकिंग में **भारत के 54 विश्वविद्यालयों** को स्थान मिला है। इससे यह **संयुक्त राज्य अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम और चीन** के बाद चौथा सबसे अधिक प्रतिनिधित्व वाला देश बन गया है।
- रैंकिंग में भारत से **IIT दिल्ली ने शीर्ष स्थान** प्राप्त किया है। 2025 वाले संस्करण में वैश्विक स्तर पर इसकी रैंक **150वीं थी। इस बार इसने 123वां स्थान** हासिल किया है।
- **'नौकरी देने वाले' वैश्विक शीर्ष 100 संस्थानों में 5 भारतीय संस्थानों** ने जगह बनाई है। यह भारतीय स्नातकों में उद्योग के मजबूत विश्वास को दर्शाता है।
- **'साइटेशंस पर फैकल्टी'** के मामले में **8 भारतीय विश्वविद्यालयों** को दुनिया की शीर्ष **100 संस्थाओं** में जगह मिली हैं।

भारत के अनुसंधान एवं विकास (R&D) इकोसिस्टम के बारे में

- भारत ने **ग्लोबल इनोवेशन इंडेक्स, 2024 में 133 वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं में 39वां स्थान** हासिल किया था।
- **भारत के R&D इकोसिस्टम से संबंधित चिंताएं:**
  - **R&D पर कम खर्च:** वर्ष 2020–21 में भारत द्वारा **R&D पर सकल घरेलू उत्पाद (GDP) का केवल 0.64%** व्यय किया गया था।
  - **निजी क्षेत्रक की सीमित भागीदारी:** वर्ष 2020-21 के दौरान निजी क्षेत्रक ने R&D (GERD) पर सकल व्यय में केवल **36.4% का योगदान** दिया था।
  - **अपर्याप्त उद्योग-शैक्षिक जगत अभिसरण:** भारतीय प्रयोगशालाओं में विकसित तकनीकों को समाज के हित में लागू करने की प्रक्रिया **काफी कमजोर** रही है।
  - **प्रतिभा पलायन:** विकसित देशों के बेहतर शोध परिवेश, अवसंरचना एवं संसाधनों की ओर आकर्षण के कारण **कई प्रतिभाशाली शोधकर्ता भारत छोड़** देते हैं।

भारत में अनुसंधान एवं विकास (R&D) को बढ़ावा देने के लिए प्रमुख पहलें

- **राष्ट्रीय विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार (STIP) का मसौदा (2020):** इसका उद्देश्य हर 5 साल में पूर्णकालिक समकक्ष (FTE) शोधकर्ताओं की संख्या, अनुसंधान एवं विकास पर सकल व्यय (GERD) और GERD में निजी क्षेत्रक के योगदान को दोगुना करना है।
- **अनुसंधान नेशनल रिसर्च फाउंडेशन (ANRF):** इसे ANRF 2023 अधिनियम के तहत स्थापित किया गया है। इसका उद्देश्य भारत के विश्वविद्यालयों, कॉलेजों और अनुसंधान संस्थाओं में R&D की शुरुआत करना, उसे बढ़ावा देना तथा अनुसंधान व नवाचार की संस्कृति को प्रोत्साहित करना है।
- **इंपैक्टिंग रिसर्च, इनोवेशन एंड टेक्नोलॉजी (IMPRINT):** इसका उद्देश्य मौलिक और अनुप्रयुक्त अनुसंधान के माध्यम से सृजित वैज्ञानिक ज्ञान-आधार तथा इंजीनियरिंग आविष्कारों के माध्यम से उसके उपयोगी प्रवर्तन के बीच के अंतर को खत्म करना है।

विश्व निवेश रिपोर्ट 2025: विकासशील देशों में निवेश की कमी 2030 के लक्ष्यों को खतरे में डाल रही है

यह रिपोर्ट **संयुक्त राष्ट्र व्यापार और विकास (पूर्ववर्ती UNCTAD)** ने जारी की है। इस रिपोर्ट में इस तथ्य पर प्रकाश डाला गया है कि वैश्विक स्तर पर मौजूद अनिश्चितता निवेश को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर रही है। यह विकासशील देशों के लिए **2030 के सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) को हासिल करना मुश्किल** बना सकता है।

रिपोर्ट के मुख्य बिंदुओं पर एक नजर

- **प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) में गिरावट:** 2024 में **वैश्विक FDI 11% घटकर 1.5 ट्रिलियन डॉलर** रह गया था। शीर्ष 20 प्राप्तकर्ता विकासशील देशों में से अधिकांश में FDI का प्रवाह घटा है।
  - **संयुक्त राज्य अमेरिका सबसे बड़ा FDI प्राप्तकर्ता** बना रहा, जबकि **भारत 16वें स्थान** पर रहा।
- **FDI वृद्धि असमान रही:** उदाहरण के लिए- **अफ्रीका में FDI में 75% की बढ़ोतरी** हुई, जो मुख्य रूप से **मिस्र** में एक बड़े प्रोजेक्ट के कारण थी, जबकि **लैटिन अमेरिका और कैरेबियाई देशों** में कुल FDI प्रवाह में **12% की गिरावट** दर्ज की गई।
- **रोजगार सृजन करने वाले उद्योगों में निवेश में ठहराव:** बहुत सी अर्थव्यवस्थाओं में पूंजी उन क्षेत्रों में स्थिर हो रही है या उन क्षेत्रों को पूरी तरह से दरकिनार किया जा रहा है जो सबसे अधिक महत्वपूर्ण हैं, जैसे - बुनियादी ढांचा, ऊर्जा, और रोजगार सृजन को बढ़ावा देने वाले उद्योग।
- **SDGs से जुड़े महत्वपूर्ण क्षेत्रकों में निवेश में भारी गिरावट:** SDGs को हासिल करने के लिए जरूरी क्षेत्रकों में निवेश में तेज गिरावट देखी गई है — जैसे **नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्रक में 31% की गिरावट और जल व स्वच्छता क्षेत्रक में 30% की गिरावट।**
  - विकासशील देशों में SDGs को हासिल करने के लिए **हर साल लगभग 4 से 5 ट्रिलियन डॉलर की जरूरत है।**
- **कारण: भू-राजनीतिक तनाव, देशों के बीच ट्रेड वार,** औद्योगिक नीतियों में बढ़ती प्रतिस्पर्धा, और वित्तीय जोखिम व अनिश्चितता के कारण लंबे समय के लिए निवेशकों का भरोसा कमज़ोर हो रहा है।
- **सिफारिशें:**
  - **बहुपक्षीय विकास बैंकों** की भूमिका को और मजबूत करना चाहिए।
  - **निजी निवेश को आकर्षित** करने के लिए **गारंटी, हाइब्रिड पूंजी और जोखिम कम करने वाले उपकरणों** के उपयोग को बढ़ाना चाहिए।

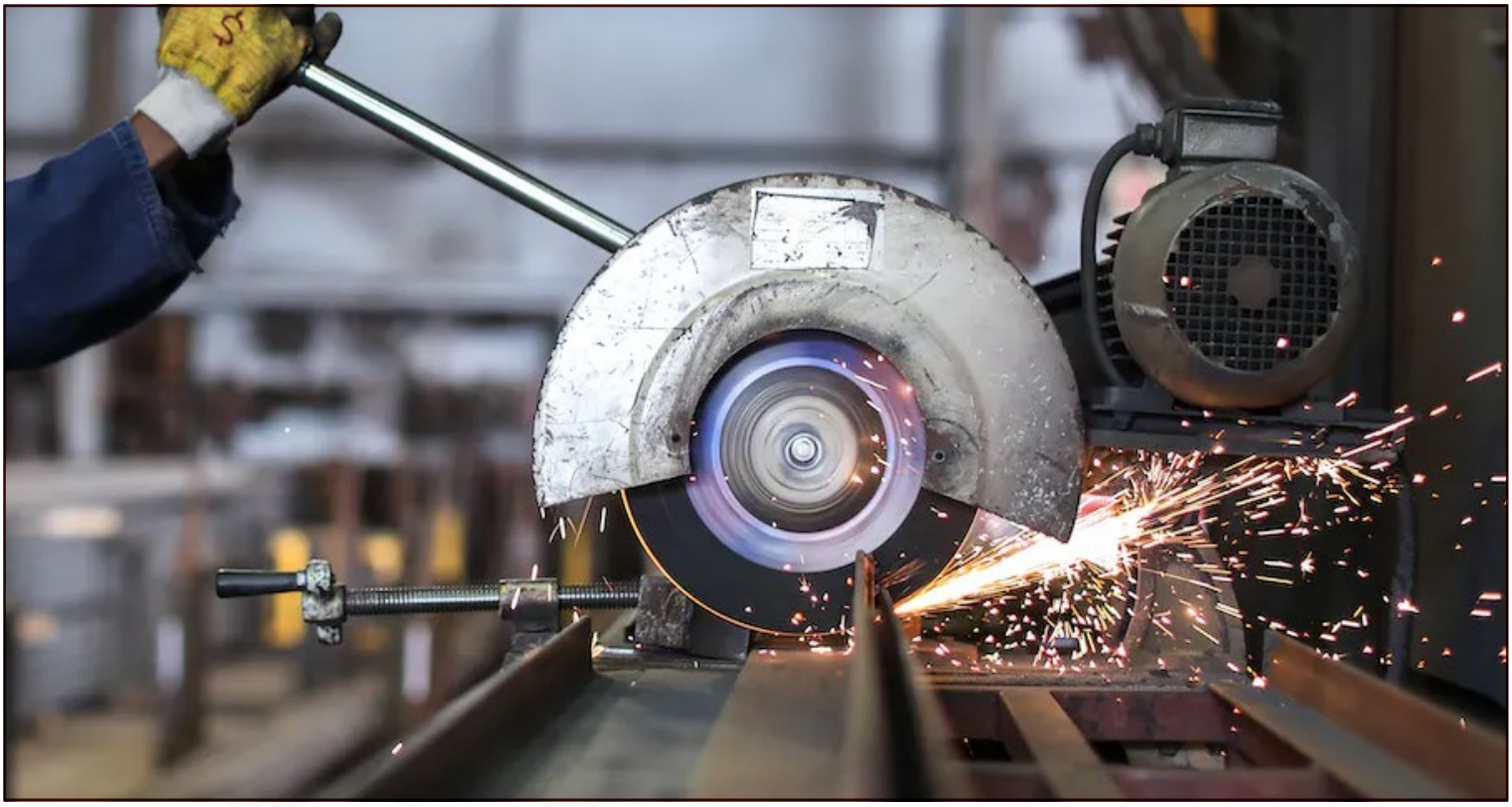

अन्य सुर्ख़ियां

एनर्जी ट्रांजिशन इंडेक्स (ETI), 2025

विश्व आर्थिक मंच (WEF) ने हाल ही में एनर्जी ट्रांजिशन इंडेक्स 2025 जारी किया।

मुख्य तथ्य:

- इस इंडेक्स में स्वीडन पहले स्थान पर रहा, उसके बाद फिनलैंड, डेनमार्क और नॉर्वे का स्थान रहा।
- **भारत की रैंक 2024 में 63 थी, जो 2025 में गिरकर 71** हो गई है।

ETI के बारे में:

- यह इंडेक्स दिखाता है कि कोई देश पारंपरिक जीवाश्म ईंधनों से स्वच्छ ऊर्जा को अपनाने की दिशा में कितनी प्रगति कर रहा है।
- इस इंडेक्स में **दो मुख्य बातें देखी जाती हैं:**
  - सिस्टम प्रदर्शन (जैसे- ऊर्जा सुरक्षा, समानता और पर्यावरणीय स्थिरता)
  - ट्रांजिशन के लिए तैयारी (जैसे- नियम, आधारभूत ढांचा, निवेश आदि)
- यह **सूचकांक कुल 43 संकेतकों** के आधार पर तैयार किया जाता है। साथ ही, **विभिन्न स्रोतों से प्राप्त आंकड़ों का उपयोग करके देशों को 0 से 100 अंकों के बीच स्कोर** दिया जाता है।

नेशनल इंटरनेट एक्सचेंज ऑफ़ इंडिया (NIXI)

NIXI की स्थापना के 20 वर्ष पूरे हुए।

NIXI के बारे में:

- यह **एक गैर-लाभकारी संगठन** है, जिसे **कंपनी अधिनियम 2013 की धारा 8 के तहत पंजीकृत** किया गया है। इसकी स्थापना 2003 में हुई थी।
- इसका उद्देश्य भारत के **इंटरनेट सेवा प्रदाताओं (ISPs) के बीच नेटवर्किंग (पीयरिंग) को बढ़ावा देना** था, ताकि इंटरनेट ट्रैफिक को देश के भीतर ही बनाए रखा जा सके।
- 2004 में, NIXI को **INRegistry** के माध्यम से **भारत के .IN कंट्री कोड टॉप-लेवल डोमेन (ccTLD)** को संभालने की जिम्मेदारी दी गई।
- NIXI **निष्पक्ष और भेदभाव रहित तरीके से काम करता** है और **वैश्विक सर्वोत्तम मानकों** का पालन करता है।

राजकोट का संधारणीय मॉडल: डंपसाइट को हरित वन में बदलना

राजकोट में नकड़ावाड़ी नाम की **एक पुरानी डंप साइट थी, जिसमें 16 लाख टन पुराना कचरा जमा** था। इस साइट का कायाकल्प करके इसे 20 एकड़ के हरित शहरी वन (Urban Forest) में परिवर्तित कर दिया गया है।

- यह कार्य **स्वच्छ भारत मिशन** के "**लक्ष्य ज़ीरो डंपसाइट**" पहल के तहत किया गया है। इसका उद्देश्य पुराने कचरा स्थलों को साफ करना और "कचरा मुक्त शहर" बनाना है।

राजकोट मॉडल के बारे में:

- इसमें **2.35 लाख देशज और तेजी से बढ़ने वाले पेड़** लगाए गए, इन पेड़ों को **मियावाकी तकनीक** से लगाया गया है।
  - मियावाकी तकनीक जापानी वनस्पति वैज्ञानिक **अकीरा मियावाकी** द्वारा 1970 के दशक में विकसित की गई थी। इसमें देशज पौधों से **तेजी से घने जंगल तैयार किए जाते** हैं।
- इसमें **कचरे से ऊर्जा बनाने की तकनीक,** और **सिंचाई के लिए ट्रीट किया गया गंदा पानी (सेकेंडरी ट्रीटेड वॉटर)** भी इस्तेमाल किया गया।
- यह मॉडल **सर्कुलर इकोनॉमी** का अच्छा उदाहरण है, जिसमें एक खराब पड़ी डंपसाइट को एक हरित और पर्यावरण अनुकूल शहरी क्षेत्र में बदला गया।

डूम्सडे फिश (ओरफिश)

हाल ही में तमिलनाडु के तट के पास मछुआरों ने एक ओरफिश पकड़ी, जिसे "**डूम्सडे फिश**" भी कहा जाता है।

डूम्सडे फिश (ओरफिश) के बारे में

- यह मछली दिखने में काफी बड़ी और अजीब होती है। इसका **शरीर लंबा** और **फीते (रिबन)** जैसा होता है, **जिससे यह पानी में आसानी से छिपकर तैर सकती है।**
- इसे "**डूम्सडे फिश**" इसलिए कहा जाता है क्योंकि **जापानी मान्यता के अनुसार इसका सतह के पास दिखना किसी प्राकृतिक आपदा (जैसे भूकंप या सुनामी) के आने की चेतावनी माना जाता है।**
- ओरफिश की लंबाई **30 फीट से भी ज्यादा** हो सकती है।
- ये मछलियाँ **फिल्टर फीडर** होती हैं, यानी ये पानी से छोटे-छोटे जीव जैसे **क्रिल, प्लवक (प्लैंकटन)** और अन्य सूक्ष्म झींगों (क्रस्टेशियन) को छानकर खाती हैं।
  - फिल्टर फीडर वे जीव होते हैं जो पानी में से भोजन (जैसे छोटे जीव या जैविक कण) को छानकर ग्रहण करते हैं। जैसे क्लैम या व्हेल।
- ये मछलियाँ **गहरे समुद्र** में रहती हैं। ये अक्सर उस क्षेत्र में पनपते हैं, जिसका वैज्ञानिकों द्वारा अब तक सबसे कम अन्वेषण किया गया है।

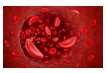

सिकल सेल डिजीज

केंद्रीय सरकार ने विश्व सिकल सेल दिवस के अवसर पर **सिकल सेल रोग के इलाज के लिए दवा** विकसित करने हेतु **10 करोड़ रुपये** के पुरस्कार की घोषणा की है।

सिकल सेल रोग के बारे में

- यह **लाल रक्त कोशिकाओं (RBCs)** से संबंधित एक **अनुवांशिक** रोग है। इसमें **हीमोग्लोबिन के असामान्य** हो जाने के कारण RBCs **कठोर और अर्धचंद्राकार** यानी सिकल जैसी संरचना बना लेता है।
- ये **सिकल आकार की कोशिकाएं जल्दी मर जाती हैं,** जिससे शरीर में **RBCs की लगातार कमी** बनी रहती है।
- **कारण:** यह एक **जन्मजात आनुवंशिक** रोग है। जब किसी बच्चे को **माता और पिता दोनों से असामान्य हीमोग्लोबिन वाले जीन** मिलते हैं, तभी यह रोग होता है।
- **फिलहाल सिकल सेल रोग के इलाज के लिए केवल एक ही दवा उपलब्ध है,** जो सिर्फ इसके लक्षणों को नियंत्रित करने में मदद करती है।

बच्चे और सशस्त्र संघर्ष

संयुक्त राष्ट्र महासचिव ने '**सशस्त्र संघर्ष में बच्चे**' विषय पर वार्षिक रिपोर्ट जारी की

रिपोर्ट के मुख्य बिंदु:

- 18 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के खिलाफ **गंभीर उल्लंघन के मामलों में 25% की बढ़ोतरी** दर्ज की गई।
  - वर्ष 2024 में **कुल 41,370 गंभीर उल्लंघन** के मामले दर्ज हुए थे।
- सबसे ज्यादा प्रभावित बच्चे **इजराइल और उसके अधीन आने वाले फिलिस्तीनी क्षेत्रों, कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य, सोमालिया, नाइजीरिया** और **हैती** में पाए गए।
- **2024 में सबसे आम उल्लंघन** थे:
  - बच्चों की **हत्या और उन्हें अपंग बनाना,**
  - **मानवीय सहायता पहुंचने से रोकना,**
  - बच्चों की **भर्ती और उनका शोषण।**
- **दोषी पक्ष:**
  - गैर-राज्य सशस्त्र समूह (गंभीर उल्लंघनों के 50% मामले इनसे संबंधित)
  - और सरकारी बल, जो बच्चों की हत्या, स्कूलों पर हमले आदि में शामिल पाए गए।

एक्सिओम मिशन-4

नासा का एक्सिओम मिशन-4 स्पेसएक्स ड्रैगन अंतरिक्ष यान में तकनीकी समस्या आने की वजह से **फिर से टल गया है।**

एक्सिओम मिशन-4 के बारे में

- यह **अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (ISS)** के लिए **चौथा निजी अंतरिक्ष यात्री मिशन** है। इस मिशन के तहत अंतरिक्ष यात्री **लगभग 14 दिनों** तक ISS से जुड़े रहेंगे।
  - इसे **स्पेसएक्स फाल्कन 9 रॉकेट** के जरिए **ड्रैगन अंतरिक्ष यान में** परिक्रमा करने वाली प्रयोगशाला के लिए प्रक्षेपित किया जाएगा।
- इसे **नासा और** अमेरिकी निजी कंपनियों **स्पेसएक्स** तथा **एक्सिओम स्पेस द्वारा संयुक्त रूप** से संचालित किया जा रहा है।
  - **एक्सिओम-1** 2022 में प्रक्षेपित किया गया पहला पूर्ण निजी मिशन था।
- यह पहला मौका होगा जब **भारत, पोलैंड और हंगरी** के लोग **अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (ISS)** पर जाएंगे।
  - यह **पहली बार होगा** जब इन तीन देशों के अंतरिक्ष यात्री एक साथ **ISS मिशन** में भाग लेंगे।

एक्सट्रीम हीलियम (EHe)

शोधकर्ताओं ने A980 नाम के एक रहस्यमयी तारे की खोज की है, जो '**एक्सट्रीम हीलियम (EHe) स्टार्स**' **नामक एक दुर्लभ वर्ग** से संबंधित है।

- पहली बार इस तारे में **जर्मेनियम** की मौजूदगी पाई गई है, जो पहले **इस प्रकार के किसी भी तारे में नहीं देखी गई थी।**

एक्सट्रीम हीलियम (EHe) तारों के बारे में

- ये **कम द्रव्यमान वाले सुपरजाइंट तारे** होते हैं। इनमें **हाइड्रोजन** जो ब्रह्मांड का सबसे आम तत्व है, **लगभग नहीं के बराबर** होता है।
- इनके वायुमंडल में मुख्य रूप से **हीलियम** पाया जाता है, साथ ही **कार्बन, नाइट्रोजन और ऑक्सीजन** की माला भी अधिक होती है।
- इन तारों की **उत्पत्ति और विकास** को लेकर वैज्ञानिकों में अभी भी मतभेद हैं, और इस पर **अध्ययन जारी है।**

'NAKSHATRA/ नक्षत्र'

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (ICMR) ने पुणे स्थित राष्ट्रीय विषाणु विज्ञान संस्थान (NIV) में अपनी पहली हाई परफॉर्मेंस कंप्यूटिंग सुविधा 'NAKSHATRA/ **नक्षत्र**' लॉन्च की है।

नक्षत्र के बारे में

- इसे **प्रधान मंत्री आयुष्मान भारत स्वास्थ्य अवसंरचना मिशन (PMABHIM)** के तहत विकसित किया गया है।
- यह एक **अत्याधुनिक कंप्यूटिंग क्लस्टर** है, जो **डेटा संग्रहण क्षमता को बढ़ाता है** और **जीनोमिक शोध** की प्रक्रिया को तेज और कुशल बनाता है।
- इसका उद्देश्य बीमारियों के खतरों का जल्दी पता लगाना, **रोग के फैलाव पर शीघ्र नियंत्रण पाना,** तथा **AI आधारित टीका और दवा के विकास** में सहायता करना है।